



Epaper

दैनिक अनोखा तीर

हरदा एवं नर्मदापुरम से एक साथ प्रकाशित

निशाने पर हर खबर

27 जून 2025

हरदा, शुक्रवार

वर्ष-15, अंक - 23, पृष्ठ-8

मूल्य- 2 रुपए

आषाढ़ शुक्ल - 2

विक्रम संवत् 2082

हरदा में पहली बार अंतरराष्ट्रीय स्तर का पाठ्यक्रम

ICSIA

Vision International Public School

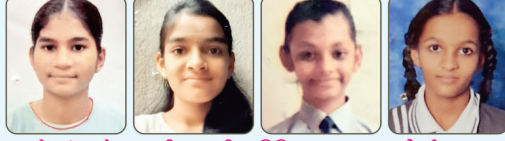
CONGRATULATIONS!

Nursery to 9th

2025-26

ADMISSION

OPEN



राधे मंगुल्ले शुभी मुकाती, रिहमा राजपूत धैर्या बारकर

Address: Pump Engine Road, Manpura, Harda (M.P.)

Mob.: 9826217121



संस्थापक डॉ. रामकिशोर दोगने पी.एच.डी. संचालक कुणाल दोगने बी.ई., (सी.एस.) एम.बी.ए.

पत्नी की हत्या करने वाले को फांसी की सजा

उज्जैन कोर्ट ने कहा-मरने तक लटकाया जाए

- बच्चों को नानी के घर भेजकर मारी थीं गोलियां

अनोखा तीर, उज्जैन ।

उज्जैन में पत्नी की हत्या करने वाले आरोपी वाहिद लाला को कोर्ट ने फांसी की सजा सुनाई। घटना करीब 15 माह पुरानी धुलेंडी (होली) वाले दिन की है। वाहिद लाला ने अपने बच्चों को नानी के घर भेजकर पत्नी संजीदा बी को गोली मारी थी। कोर्ट में गुरुवार को इस मामले में सजा सुनाते हुए फैसले में कहा कि दोषी को फांसी लगाकर तब तक लटकाया जाए जब तक उसकी मृत्यु न हो जाए। कोर्ट ने अवेध



रूप से शस्त्र रखने पर 5 वर्ष के कठोर कारावास और 100 रुपए अर्थदंड की सजा भी सुनाई है।

पत्नी के चरित्र पर शक करता था- जिला अभियोजन अधिकारी राजेंद्र खांडेगरे ने बताया कि एक साल चले केस में कोर्ट ने आरोपी को फांसी की सजा सुनाई है।

होली के दिन मारी थी गोलियां

थाना नागझिरी के गणेश नगर में रहने वाले वाहिद ने 25 मार्च 2024 को होलिका दहन के अगले दिन धुलेंडी की सुबह पत्नी 45 वर्षीय संजीदा बी को आदर्शनगर स्थित उसकी चाची के घर के सामने गोलियां मारी थीं, जिससे उसकी मौत हो गई थी। हत्या से पहले वाहिद लाला ने बेटे फरहान और दो बेटियों को ई-रिक्शा से एटलस चौराहा क्षेत्र में रहने वाली नानी के घर रवाना कर दिया। बच्चों से कहा था कि वह उनकी मां के साथ पीछे बाइक से आएगा।

टीआई को सजा, एक हजार पौधे लगाने होंगे

- एमपी हाईकोर्ट ने कहा-फोटो के साथ देनी होगी जीपीएस लोकेशन की रिपोर्ट

अनोखा तीर, जबलपुर ।

जबलपुर हाईकोर्ट ने गुरुवार को सतना के कोतवाली थाना के टीआई रावेन्द्र द्विवेदी को अनोखी सजा सुनाई है। उन्हें चित्रकूट में एक साल में एक हजार फलदार पौधे लगाने होंगे और इनकी देखभाल भी करनी होगी। हाईकोर्ट ने कहा कि कोतवाली थाना प्रभारी रावेन्द्र द्विवेदी 1 जुलाई 2025 से 31 अगस्त 2026 के बीच पौधरोपण करेंगे। उन्हें पौधों के फोटो और उनकी जीपीएस लोकेशन की जानकारी भी कोर्ट में पेश करनी होगी।

इस मामले में अगली सुनवाई 16 सितंबर को



रावेन्द्र द्विवेदी, टीआई

होगी। कोर्ट ने निर्देश दिए हैं कि इससे पहले सतना एसपी को टीआई के लगाए गए पौधों का निरीक्षण करना होगा और अगली सुनवाई (16 सितंबर) पर इसकी रिपोर्ट कोर्ट में प्रस्तुत करनी होगी।

टीआई को इसलिए मिली पौधे लगाने की सजा

सतना के कोतवाली थाना प्रभारी रावेन्द्र द्विवेदी ने रेप के एक मामले में कोर्ट के नोटिस की तामीली नहीं कराई थी। दरअसल, एक नाबालिग से दुराचार के मामले में सतना की जिला कोर्ट ने 10 अक्टूबर 2021 को राम अवतार चौधरी नाम के शख्स को उम्रकैद की सजा सुनाई थी। इस पर दोषी ने हाईकोर्ट में अपील दाखिल की। जबलपुर हाईकोर्ट ने 30 सितंबर 2024 को पीड़िता को नोटिस जारी किया था। सतना कोतवाली पुलिस को नोटिस की तामीली करानी थी, जो नहीं हुई।

रेलवे क्रॉसिंग वाला रास्ता बंद करने का विरोध

पटरी पर बैठी महिलाएं, घंटे भर रुका ट्रेन का इंजन

- लोग बोले- घूमकर जाने में होगी समस्या

सतना (एजेंसी)। सतना में महिलाएं रेलवे ट्रैक पर बैठ गईं। उन्होंने यहां नारेबाजी की। उनकी वजह से 1 घंटे तक ट्रेन का इंजन नहीं निकल पाया। पुलिस वहां पहुंची तो लोगों को समझाश्श देकर वहां से हटाया। मारुति नगर से होकर जाने वाले रेलवे क्रॉसिंग पर बिरला फैक्ट्री प्रबंधन ने रेलवे ट्रैक के दोनों ओर गड्ढा खोदकर स्लीपर लगाकर आम रास्ता बंद कर दिया।

स्थानीय नागरिकों ने गुरुवार को विरोध किया। उनका कहना था कि वहां से लोग रोज आना-जाना



करते हैं। रास्ता बंद करने की वजह से उन्हें निकलने में परेशानी का सामना करना पड़ेगा, इसलिए रास्ता चालू रखा जाए। इधर, बुधवार को ही यहां पर एक कार से मालगाड़ी की इंजन टकराया था। कार में बैठा परिवार बाल-बाल बचा था।

एक दिन पहले हुआ था हादसा

इस रेलवे ट्रैक पर बुधवार शाम को क्रॉसिंग के दौरान हादसा हुआ था। एक परिवार बार-बार बचा था। संजय शुक्ला अपनी पत्नी और बच्चों के साथ कार में ट्रैक पार कर रहे थे। तभी बिरला फैक्ट्री की ओर जा रही मालगाड़ी आ गई। कार मालगाड़ी की चपेट में आकर करीब 2 मीटर तक घसीटी। ट्रेन की कम रफ्तार और लोको पायलट द्वारा इमरजेंसी ब्रेक लगाने से बड़ा हादसा टल गया।

प्राकृतिक और रासायनिक फसलों के उपाजर्जन के लिए मंडियों में होगी पृथक व्यवस्था: मुख्यमंत्री

प्राकृतिक खेती के प्रोत्साहन के लिए योजनाएं बनायें



अनोखा तीर, भोपाल ।

मुख्यमंत्री डॉ. मोहन यादव ने 'प्राकृतिक खेती के नाम एक चौपाल' कार्यक्रम को अद्भुत व प्रेरणादायी बताते हुए कहा कि जिस प्रकार नमस्कार का असली महत्व कोविड के बाद समझ आया, ठीक इसी प्रकार प्राकृतिक खेती का विचार रासायनिक खेती के दुष्परिणामों के बाद आ रहा है। उन्होंने कहा कि मैंने स्वयं खेती की है, जिसमें

रासायनिक खादों के उपयोग की आदत नहीं थी पश्चिम आधारित सोच के कारण कृषि में रासायनिक खाद का उपयोग बढ़ा। भारतीय ज्ञान के प्रति बढ़ते रुझान को देखते हुए गौ-पालन के लिए गौशाला बनाये जा रहे हैं, जिसके उत्पाद से प्राकृतिक खेती को बढ़ावा मिलेगा। मुख्यमंत्री डॉ. यादव ने कहा कि मध्यप्रदेश में प्राकृतिक खेती की बड़ी संभावना है। उन्होंने कृषि मंत्री से कहा कि प्राकृतिक खेती के प्रोत्साहन के लिए योजनाएं

बनायें, वे निश्चित रूप से इसे लागू करेंगे। मुख्यमंत्री ने प्राकृतिक खेती और रासायनिक खेती से उत्पादित फसलों के उपाजर्जन के लिए मंडियों में दो तरह की व्यवस्था करने को कहा, जिससे उत्पादित फसलों के उपभोग में कठिनाई न आये। मुख्यमंत्री गुरुवार को जबलपुर के मानस भवन में चौपाल प्राकृतिक खेती के नाम कार्यक्रम को संबोधित कर रहे थे।

मुख्यमंत्री डॉ. यादव ने कहा कि मध्यप्रदेश में दुग्ध उत्पादन अभी 9 प्रतिशत है, इसे 25 प्रतिशत तक ले जायेंगे। मुख्यमंत्री डॉ. यादव ने कहा कि फैट के आधार पर दूध खरीदने की व्यवस्था है। भैंस के दूध को अधिक लाभदायक बताकर देशी गाय के दूध को महत्वहीन बनाने का षडयंत्र रचा गया। उन्होंने गाय के दूध के उपयोग के लिए प्रोत्साहित किया। मुख्यमंत्री डॉ. यादव ने प्राकृतिक खेती के नाम एक चौपाल कार्यक्रम के मुख्य वक्ता गुरुवार के राज्यपाल आचार्य देवव्रत का हार्दिक स्वागत व आभार व्यक्त किया और कहा कि आचार्य देवव्रत ने अत्यंत सरलता से प्राकृतिक खेती के विषय को समझाया है।

ग्वालियर से बैंगलोर के लिये नई रेल सेवा का हुआ शुभारंभ

उद्योग, रोजगार का नया हब बनेगा ग्वालियर-चंबल: सीएम डॉ. यादव

अनोखा तीर, भोपाल । मुख्यमंत्री डॉ. मोहन यादव ने कहा है कि ग्वालियर-चंबल अंचल को एक बड़ी ट्रेन सुविधा उपलब्ध हुई है। अब अंचल के लोग ग्वालियर से ट्रेन द्वारा सीधे बैंगलोर पहुंच सकेंगे। युवाओं के लिये यह विशेष तौर पर तोहफा है। साप्ताहिक ग्वालियर-बैंगलोर ट्रेन सुविधा से



आईटी के क्षेत्र में अध्ययन कर रहे छात्र-छात्राओं को विशेष लाभ मिलेगा। मुख्यमंत्री डॉ. यादव ने जबलपुर से गुरुवार को ग्वालियर से बैंगलोर नई ट्रेन सुविधा का वर्चुअल शुभारंभ किया। कार्यक्रम से केन्द्रीय रेल मंत्री श्री अश्विनी वैष्णव भी वर्चुअली जुड़े। ग्वालियर में आयोजित समारोह में केन्द्रीय संचार एवं पूर्वोत्तर क्षेत्र विकास मंत्री श्री ज्योतिरादित्य सिंधिया, विधानसभा अध्यक्ष श्री नरेन्द्र सिंह तोमर, ऊर्जा मंत्री श्री प्रद्युम्न सिंह तोमर, सांसद श्री भारत सिंह कुशवाहा सहित वरिष्ठ जनप्रतिनिधि एवं रेलवे के अधिकारी और बड़ी संख्या में नागरिक उपस्थित थे। मुख्यमंत्री डॉ. यादव ने कहा कि भारत सरकार से मध्यप्रदेश को रेल सुविधाओं के क्षेत्र में अनेक सीमांतें मिली हैं। प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी के नेतृत्व में मध्यप्रदेश ने रेलवे के क्षेत्र में विकास के कई आयाम छुए हैं।

बिजली गिरने से दो भाइयों की मौत, दो किसान झुलसे

इंदौर में दिन में छाया अंधेरा, गाड़ियों की लाइट जलानी पड़ी, 25 जिलों में बारिश

अनोखा तीर, भोपाल ।

मध्यप्रदेश में तेज बारिश का दौर गुरुवार को भी जारी रहा। इंदौर में दोपहर में ही काले घने बादल छा गए और तेज बारिश होने लगी। गाड़ियों की लाइट जलानी पड़ी। विदिशा और जबलपुर में भारी बारिश से कई इलाकों में पानी भर गया। इंदौर में दिन में ही अंधेरा छा गया। तेज बारिश में गाड़ियों की हेडलाइट जलानी पड़ी।

आगर मालवा के लोलकी गांव में गुरुवार दोपहर करीब 3 बजे चार युवकों पर बिजली गिर गई। हादसे में दो मौसरे भाइयों की मौके पर ही मौत हो गई, जबकि दो किसान झुलस गए। मृतकों की पहचान 33 वर्षीय कमल सिंह और 30 वर्षीय लखन उर्फ लक्ष्मण सिंह के रूप में हुई। 25 वर्षीय



मान सिंह और 25 वर्षीय विशाल पाटीदार झुलस गए हैं। विदिशा में थोड़ी देर हुई बारिश से निचले इलाकों में पानी भर गया। जबलपुर में भी कई जगह घरों में पानी घुस गया। सतना में कलेक्ट्रेट रोड पर एक पेड़ पर बिजली गिरने का वीडियो सामने आया है।

चलती ट्रेन से उतरा... शक में पकड़ा, चोर निकला भोपाल स्टेशन के पास से दबोचा; 4 मोबाइल, एक पर्स जब्त

अनोखा तीर, भोपाल ।

भोपाल रेलवे स्टेशन पर चलती ट्रेन से उतरे एक युवक को पुलिस ने शक में पकड़ लिया। जब उससे पूछताछ की गई तो वह चोर निकला। उसके कब्जे से 4 मोबाइल और एक पर्स जब्त किया गया है। पर्स उसी ट्रेन की एक महिला यात्री का था।

रेलवे के वरिष्ठ मंडल वाणिज्य प्रबंधक सौरभ कटारिया ने बताया, रेलवे सुरक्षा बल के आरक्षक अमित कुंडू एवं आरक्षक धर्मेन्द्र कुमार शिफ्ट के दौरान मोटर साइकिल से गश्त कर रहे थे। इसी दौरान वे तड़के 4 बजे भारत टॉकीज ब्रिज के पास पहुंचे। वहां गाड़ी संख्या 18234 (छत्तीसगढ़ एक्सप्रेस) के गुजरते समय एक युवक को चलती ट्रेन से उतरकर सदिग्ध स्थिति में भागते हुए देखा।

संदेह के आधार पर उक्त युवक को रोका और पूछताछ की तो उसने अपना नाम नावेद उग्र 32 वर्ष निवासी भोपाल बताया। तलाशी के दौरान उसके पास से चार मोबाइल फोन एवं एक लेडिंस पर्स बरामद हुआ।

माचक नदी के रफटे पर पलटा सामान से भरा वाहन

व्यापारियों का नुकसान, नया पुल बनाने की मांग

अनोखा तीर, मसनगांव ।

इंदौर से सिराली जा रहा एक लॉडिज वाहन मंगलवार सुबह माचक नदी के रफटे पर पलट गया। वाहन में पाइप, वायर के बंडल और टीन समेत परचून का भारी सामान लदा हुआ था। हादसे में वाहन में रखा सारा माल नदी में बिखर गया, जिससे व्यापारियों को भारी नुकसान उठाना पड़ा। प्राप्त जानकारी के अनुसार, इंदौर से सिराली की ओर जा रहा आयशर वाहन क्र. एमपी 09 डीएच 4103 मसनगांव होते हुए रोलगांव की माचक नदी पार कर रहा था। नदी पर बना पुल पिछले कई वर्षों से जर्जर होने के कारण बंद पड़ा है, जिससे वाहन चालकों को वैकल्पिक रफटे से होकर निकलना पड़ता है। लेकिन बारिश के कारण नदी के किनारे दलदल और फिसलन की स्थिति बनी हुई है। इन्हीं परिस्थितियों में वाहन मोड़ने पर चढ़ने में असफल रहा, तब चालक ने वाहन को जब पास हाइवे की कोशिश की। इसी दौरान रफटे पर अनियंत्रित होकर वाहन पलट गया। हादसे में वाहन में लदा सारा सामान नदी में गिर गया। सुबह-सुबह सिराली के व्यापारियों का माल लेकर निकला यह वाहन समय पर पहुंच नहीं सका, जिससे स्थानीय



इसके बाद लोक निर्माण विभाग ने अस्थायी मरम्मत की, पर बारिश के बाद फिर से पुल जर्जर हो गया और आवागमन के लिए बंद कर दिया गया। तब से वाहन चालक गांव के भीतर से होकर नदी के रफटे से निकलते हैं, जो बारिश के समय बेहद खतरनाक हो जाता है। ग्रामीणों ने बताया कि समय और संसाधनों की बर्बादी के साथ-साथ अब जान-माल का खतरा भी बढ़ गया है।

व्यवसायियों को भी दिक्कत का सामना करना पड़ा। स्थानीय लोगों ने बताया कि हरदा से सिराली तक रोजाना सैकड़ों वाहन गुजरते हैं। लेकिन माचक नदी के वैकल्पिक मार्ग पर बने अस्थाई रफटे पर दलदल और कीचड़ के कारण बड़े वाहनों को निकालना बेहद मुश्किल होता है। छोटे वाहन किसी तरह पार हो जाते हैं, परंतु बड़े ट्रकों और आयशर जैसे वाहनों को जोखिम से गुजरना पड़ता है। हादसे के बाद ग्रामीणों और वाहन चालकों ने प्रशासन से माचक नदी पर जल्द से जल्द नया पुल बनाए जाने की मांग की है।

उल्लेखनीय है कि 5 अगस्त 2015 को आई बाढ़ में पुल की अग्रोच बह गई थी।

सार-समाचार

आपातकाल की 50वीं वर्षगांठ मनाई

लोकतंत्र सेनानियों का हुआ सम्मान, ‘मीसा’ पुस्तक का हुआ विमोचन

अनोखा तीर, भोपाल/हरदा। मुख्यमंत्री निवास, भोपाल में आज 26 जून को लोकतंत्र हत्या दिवस के रूप में एक कार्यक्रम आयोजित किया गया। यह आयोजन 25 जून 1975 को तत्कालीन प्रधानमंत्री श्रीमती इंदिरा गांधी द्वारा देश में घोषित आपातकाल की 50वीं वर्षगांठ के उपलक्ष्य में किया गया, जिसमें हजारों लोकतंत्र सेनानी, उनके परिजन, जनप्रतिनिधि और गणमान्य नागरिकों ने भाग लिया। कार्यक्रम में मुख्यमंत्री डॉ. मोहन यादव ने आपातकाल के दौरान लोकतंत्र की रक्षा के लिए संघर्ष करने वाले सेनानियों को नमन करते हुए उन्हें भारत के लोकतांत्रिक इतिहास का



स्वर्णिम स्तंभ बताया। उन्होंने कहा कि आपातकाल भारत के संविधान और नागरिक स्वतंत्रताओं पर सीधा प्रहार था, लेकिन हमारे वीर सेनानियों ने जेलों की यातनाएं झेलकर भी लोकतंत्र को जीवित रखा। इस अवसर पर विशिष्ट अतिथियों में पूर्व राज्यपाल कसान सिंह सोलंकी, वर्तमान राज्यपाल शायरचंद गहलोत, भोपाल सांसद आलोक शर्मा, भोपाल महापौर, मंत्री विश्वास सारंग, विधायक रामेश्वर शर्मा, एवं लोकतंत्र सेनानी संगठन के राष्ट्रीय अध्यक्ष कैलाश सोनी, प्रदेश अध्यक्ष तपन भोमिक, राष्ट्रीय कोषाध्यक्ष संतोष शर्मा सहित अनेक गणमान्य जन उपस्थित रहे। कार्यक्रम में हरदा जिले से लोकतंत्र प्रहरी जिला संयोजक प्रकाशचंद्र टांक, लोकतंत्र सेनानी मगरुब भाई हुसेन बंदूकवाला, उनके पुत्र अमजद, स्व. लोकतंत्र सेनानी जमुना प्रसाद जैसानी के सुपुत्र अधिका शांति जैसानी भी विशेष रूप से शामिल हुए। इसके अलावा खंडवा से लोकतंत्र प्रहरी मध्य प्रदेश अध्यक्ष नरेंद्र अग्रवाल की गरिमामयी उपस्थिति भी रही। इस ऐतिहासिक आयोजन में आपातकाल के संघर्षों पर आधारित पुस्तक ‘मीसा’ का भी विमोचन किया गया। इस पुस्तक में मीसाबंदियों के अनुभव, संघर्ष और योगदान को संजोया गया है, जो आने वाली पीढ़ियों के लिए प्रेरणास्रोत रहेगा। कार्यक्रम में लोकतंत्र सेनानियों एवं उनके परिजनों का सामूहिक सम्मान किया गया तथा लोकतंत्र की रक्षा और संवैधानिक मूल्यों के प्रति प्रतिबद्धता दोहराई गई।

कलेक्टर ने यूरिया के रैक पाईट व डबल लॉक केन्द्रों का किया निरीक्षण

अनोखा तीर, हरदा। कलेक्टर सिद्धार्थ जैन ने गुरुवार को हरदा जिले के रैक पाईट पर एचयूआरएल कम्पनी की 2700 मैट्रिक टन की यूरिया रैक का निरीक्षण किया। उन्होंने निरीक्षण के दौरान अधिकारियों से रैक वितरण के संबंध में जानकारी ली। उन्होंने निर्देशित किया कि शासन के निर्देशानुसार 70 प्रतिशत शासकीय तथा 30 प्रतिशत निजी विक्रेताओं को यूरिया का वितरण किया जाए। निरीक्षण के दौरान कलेक्टर श्री जैन ने



विपणन संघ एवं एम.पी. एग्रो के डबल लॉक केन्द्रों का निरीक्षण कर किसानों को वितरित की जा रही खाद व्यवस्था का भी अवलोकन किया। उन्होंने गोदाम प्रभारी एवं जिला अधिकारी को किसानों को सुगमता से खाद उपलब्ध कराने के निर्देश दिये। उन्होंने इस दौरान गोदाम के आसपास साफ-सफाई व्यवस्था बनाये रखने के निर्देश भी उपस्थित अधिकारी कर्मचारियों को दिए। निरीक्षण के दौरान जिला विपणन अधिकारी योगेश मालवीय सहित अन्य अधिकारी कर्मचारी उपस्थित थे।

नारद जयंती के उपलक्ष्य में हुआ पत्रकार मिलन समारोह

सृष्टि के आद्य पत्रकार थे नारद

● देवता, मनुष्य और राक्षसों के बीच से लाते थे खबरें: गोविंद राजपूत

अनोखा तीर, हरदा।

तीनों लोकों में वीणा वादन करते, नारायण-नारायण जपते जपते भ्रमण करने वाले देवव्रद्धि नारद इस सृष्टि के आद्य (पहले) पत्रकार थे। वे देवताओं, मनुष्यों और राक्षसों के बीच सहजता व निर्भिकता से जाकर सूचनाओं का आदान- प्रदान करते थे। वर्तमान समय में भी पत्रकार बंधु निर्भिकता का परिचय देते हुए खबरों का संकलन और प्रकाशन करते हैं। यह बात राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ के जिला कार्यवाह गोविंद राजपूत ने गुरुवार को परमात्मा प्रसाद वाजपेयी, न्यास द्वारा आयोजित पत्रकार मिलन कार्यक्रम में मुख्य अतिथि के रूप में संबोधित करते हुए कही। उन्होंने कहा नारद जी की सूचनाओं के प्रसार के पीछे कल्याण भाव रहता था। उसी अनुरूप पत्रकारिता के पीछे का उद्देश्य जन कल्याण, सामाजिक न्याय व

मानवाधिकारों की वकालात करना है। भारत में पत्रकारिता के महत्व को कम करके नहीं आँका जा सकता। पत्रकारिता भारत के लोकतंत्र की रीढ़ है। जनता को सूचित और शिक्षित करना पत्रकारिता का

धर्म है। आर्थिक प्रगति और पारदर्शी व्यावसायिकता का समर्थन करना। उद्धोधन के तहत गोविंद जी ने समाज में संघ का विलय या संघ में समाज का विलय करने की अवधारणा पर प्रकाश डालते हुए, संघ के शताब्दी वर्ष के पंच परिवर्तन को भी संक्षिप्त में समझाया। कार्यक्रम के विशेष अतिथि नर्मदापुरम विभाग के संघ के विभाग प्रचार प्रमुख संतोष नौरिया ने कहा, प्रचार विभाग का उद्देश्य है कि संघ का विचार प्रत्येक नगर, गांव में घर घर तक

पहुंचे। पत्रकार बंधु भी समाज में सामाजिक सरोकार के विषयों तक जन जन तक पहुँचाते हैं। एक तरह से वे भी हमारे बड़े सहयोगी हैं। श्री नौरिया ने एक पत्रकार की महता और चुनौती को कवि हर्ष

कुमार की लिखित एक कविता पढ़कर व्यक्त किया , जो इस प्रकार है -

मैं पत्रकार हूँ, मैं खोज हूँ, मैं विचार हूँ, मैं अभिव्यक्ति, की पुकार हूँ, मैं पत्रकार हूँ। किसी सच की तलाश में, या किसी शक में, आभास में, मैं किसी लाचार का विचार हूँ, या किसी नेता पर प्रहार हूँ,

मैं पत्रकार हूँ.....।। कार्यक्रम की अध्यक्षता जिले के

टिम्परनी निवासी वरिष्ठ पत्रकार गुप्तेव बिस्मैरे ने की। उन्होंने कहा परमात्मा प्रसाद वाजपेयी, न्यास को बधाई देता हूँ कि नारद जयंती के बहाने ही सही पत्रकारों की सुध ली गई। समाज में किन चुनौतियों और बाध्‍यता के बीच एक पत्रकार काम करता है, उसे ठीक से वही जान सकता है, जिसने कभी पत्रकारिता को जिया है। उन्होंने उपस्थित पत्रकार बंधुओं का आह्वान किया कि समाज में पत्रकारिता धर्म निभाने में जो चुनौतियों आती हैं, उसे स्वीकारते हुए बीच का रास्ता चुन निर्भीक, निष्पक्ष व ईमानदारी से सामाजिक सरोकार की पत्रकारिता करते रहिए। कार्यक्रम में प्रिंट, इलेक्ट्रॉनिक मीडिया, यू ट्यूब चैनल व सोशयल मीडिया के पत्रकार बंधु उपस्थित थे। कार्यक्रम का संचालन संघ के जिला प्रचार प्रमुख डॉ. विवेक भुस्कुटे ने किया। उन्होंने जानकारी दी कि न्यास अगले वर्ष से जिले के वरिष्ठ पत्रकारों व पत्रकारिता के क्षेत्र में उल्लेखनीय कार्य करने वाले पत्रकारों को सम्मानित भी करेगा। डॉ. भुस्कुटे ने अतिथियों का परिचय कराया और आभार माना।

हरदा स्टेशन पर लंबी दूरी की ट्रेनों के स्टॉपेज की मांग, सौपा ज़ापन

अनोखा तीर, हरदा।

समिति ने उठाई ठहराव की पुरजोर मांग

नगर जनहित सुरक्षा समिति के सदस्यों ने ज़ापन में बताया कि हरदा नगर राष्ट्रीय राजमार्ग और नगर पालिका की सीमा में स्थित है। इसके बावजूद यह क्षेत्र औद्योगिक रूप से पश्चिम रेलवे महाप्रबंधक, जबलपुर को ज़ापन सौंपकर मुंबई, गोरखपुर, बनारस और जयपुर जाने वाली प्रमुख ट्रेनों का हरदा में स्टॉपेज देने की मांग की है। सामाजिक कार्यकर्ता व ग्राम सामाजिक एनीमेटर संघ के जिलाध्यक्ष राजकुमार शर्मा ने बताया कि वर्तमान में हरदा से न तो मुंबई एलटीटी एक्सप्रेस 20104 और मंगला एक्सप्रेस 12618 जैसी ट्रेनें मिल रही हैं और न ही खंडवा की ओर जाने वाली बनारस सुपरफास्ट 12167, महानगरी सुपरफास्ट 22177 और जयपुर सुपरफास्ट एक्सप्रेस 11407, 12720 का ठहराव हरदा में है। ऐसे में जिले के हजारों यात्रियों को ट्रेनों में चढ़ने के लिए भोपाल, इटारसी या खंडवा जैसे बड़े स्टेशनों का सहारा लेना पड़ रहा है, जिससे ना केवल समय की बर्बादी होती है बल्कि आर्थिक नुकसान भी उठाना पड़ता है।

नवीनीकरण के बावजूद सुविधा नहीं

ज़ात हो कि अमृत भारत स्टेशन योजना के अंतर्गत हरदा रेलवे स्टेशन पर करोड़ों रुपये का नवीनीकरण कार्य जारी है। इसके बावजूद यात्रियों को जरूरी ट्रेन सेवाएं नहीं मिल रही हैं। फिलहाल हरदा से चलने वाली ज्ञान गंगा एक्सप्रेस ही एकमात्र साप्ताहिक ट्रेन है, लेकिन उसमें भी यात्रियों को खड़े रहने तक की जगह नहीं मिलती।

जलदूतों का प्रशिक्षण संपन्न, जल संरक्षण की दी जिम्मेदारी

अनोखा तीर, हरदा। जल गंगा संवर्धन अभियान के अंतर्गत प्रदेश शासन के निर्देशानुसार जल संरक्षण एवं सतत विकास की दिशा में एक महत्वपूर्ण कदम उठाते हुए 24 जून को जनपद पंचायत हरदा के

प्रशिक्षण कार्यक्रम आयोजित किया गया। यह प्रशिक्षण मुख्य कार्यपालन अधिकारी जनपद पंचायत हरदा की अध्यक्षता में संपन्न हुआ। यह आयोजन मध्यप्रदेश शासन पंचायत एवं ग्रामीण विकास विभाग भोपाल के पत्र के परिपालन में किया गया, जिसमें ग्राम स्तर पर जल संरक्षण हेतु जागरूकता बढ़ाने और स्थानीय स्तर पर जल स्रोतों के संवर्धन का उद्देश्य निर्धारित किया गया था। प्रशिक्षण सत्र में श्री पाटीदार सहायक यंत्री, दीपक चौरै एपीओ मनरेगा, तथा राकेश वर्मा जन अभियान परिषद, हरदा द्वारा जलदूतों को

जल संरक्षण के विभिन्न तकनीकी और व्यवहारिक पहलुओं पर विस्तार से मार्गदर्शन प्रदान किया गया। इस दौरान जन अभियान परिषद के सदस्य, एनआरएलएम की महिला समूह की सदस्याएं, मनरेगा मेट, सामाजिक अंकेक्षण से जुड़े वीएसए तथा ग्राम स्तर पर सक्रिय जलदूतों ने प्रशिक्षण में भाग लिया। प्रशिक्षण में वर्षा जल संचयन, जल का सदुपयोग, ग्राम/वाड़ स्तर पर जल संरक्षण की रणनीतियां, तथा स्थानीय जल स्रोतों का पुनर्जीवन जैसे महत्वपूर्ण

विषयों पर जानकारी दी गई। इसके साथ ही जलदूतों को अपने-अपने क्षेत्रों में जल संरक्षण संबंधी गतिविधियाँ संचालित करने हेतु प्रोत्साहित किया गया। प्रशिक्षण पूर्ण होने के पश्चात सभी प्रतिभागियों को प्रमाण-पत्र वितरित किए गए।

24 घंटों में जिले में 21.4 मि.मी. औसत वर्षा- जले में गत चौबीस घंटों में 21.4 मि.मी. औसत वर्षा दर्ज की गई है। अधीक्षक भू- अभिलेख ने बताया गत चौबीस घंटे में हरदा तहसील में 8.6 मि.मी., टिमरनी में 78.8 मि.मी., खिरकिया में 6.4 मि.मी., सिराली में 13.2 मि.मी. तथा रहटगांव में 0 मि.मी. वर्षा दर्ज की गई।

हेल्प लाईन नंबर	
सीएम हेल्प लाईन	181
पुलिस	100
फायर बिग्रेड	101
एम्बुलेन्स	108
चाईल्ड हेल्प लाईन	1098
किसान कॉल सेंटर	18001801551
विद्युत शिकायत	18002331912
विद्युत सेवा	1912
पशु सेवा	1962
पुलिस सेवा	112-100
अग्नि सेवा	101
एम्बुलेन्स सेवा	102
यातायात पुलिस	103
आपदा प्रबंधन	108
चाईल्ड लाईन	1098
रेलवे पूछताछ	139
भ्रष्टाचार विरोधी	1031
रेल दुर्घटना	1072
सड़क दुर्घटना	1073
सीएम सहायता लाईन	1076
क्राईम सटायर	1090
महिला सहायता	1091
पृथ्वी भूकंप	1092
बाल शोषण सहायता	1098
किसान कॉल सेंटर	1098
नागरिक कॉल सेंटर	155300

ॐ शान्ति

चलित उठावना

अत्यंत दुख के साथ सूचित करना पड़ रहा है कि राहुल बंसल एवं अतुल बंसल के पिताजी

श्री रामबाबू बंसल (करताना वाले)

(पुत्र स्वर्गीय श्री बद्रीप्रसाद जी बंसल)

का बैकुंठवास दिनांक 25-06-2025 बुधवार को हो गया है

जिनका चलित उठावना

दिनांक 27-06-2025 शुक्रवार

को दोपहर 3 बजे से 5 बजे तक,

नार्मदीय धर्मशाला, मेन रोड हरदा में रखा गया है

प्रतिष्ठान

करताना वाला वस्त्रालय

विजय कैमिस्ट, विजय धामा,

श्री विजय एजेंसी, विजय रोल्स

होटल बागवान पैलेस हरदा

शोकालुल

डॉ श्याम बंसल,

विजय बंसल,

विनोद बंसल

एवं समस्त करताना वाला परिवार, हरदा।

भारती विद्या मंदिर होस्टल

कक्षा 5वीं से 12वीं

Better Facilities for Better Studies

लड़कों के लिए सुरक्षित एवं संरक्षित आवासीय सुविधा

हम स्वच्छ रहने की स्थिति सुनिश्चित करते हैं और देखभाल करते हैं।

MATHS SCIENCE COMMERCE BIOLOGY HUMANITES

From hostel rooms to success stories.

होस्टल सुविधाएं

• स्कूल कैम्पस में स्थित बांग्यज होस्टल

• 24x7 CCTV निगरानी

• 24 घंटे बिजली व शुद्ध RO जल की सुविधा

• कमरे में कुलर व सर्दियों में गीजर की व्यवस्था

• पौष्टिक भोजन की व्यवस्था

• पालकों से नियमित बातचीत

होस्टल के लिए Extra Classes

मेरा भैरुदावाला घर

Only last 40 Seats Left

भारती विद्या मंदिर इंटरनेशनल स्कूल भैरुदा

www.bhartividyamandir.in 7999505378, 9770017052

-अंजनी सक्सेना

भगवान जगन्नाथ की रथयात्रा का महोत्सव पूरे देश में धूमधाम से मनाया जाता है। सारे देश में आषाढ़ माह के शुक्ल पक्ष की द्वितीया को हर्षोल्लास से रथयात्रा निकाली जाती है। मध्यप्रदेश की राजधानी भोपाल के नजदीक विदिशा जिले के मानौरा गांव में भी यह रथ यात्रा धूमधाम से निकाली जाती है, लेकिन यहां यह उत्सव इसलिए विशिष्ट और अलग है कि यहां यह आरंभ ही तब होता है जब पुरी में भगवान जगन्नाथ के रथ के पहिए थम जाते हैं। यहाँ लगभग 200 वर्षों से यह परम्परा चल रही है। जब हमारे देश में संचार के साधन सीमित थे और रेडियो, टीवी जैसी चीजों का नामो निशान ही नहीं था, तब भी यही कहा जाता था कि भगवान जगन्नाथ मानौरा आने के लिए पुरी में अपने रथ का पहिया रोक लेते हैं। मानौरा मध्यप्रदेश के विदिशा जिले का एक सामान्य सा गांव होते हुए भी विशिष्ट है। यहाँ मेहमानों का अभिवादन भी जय जगदीश कह कर किया जाता है। यहां भगवान जगन्नाथ (जिन्हें मानौरा में जगदीश कहते हैं), भगवान बलभद्र एवं देवी सुभद्रा का दो सौ वर्ष पुराना मंदिर है। पुरी की ही तरह यहां भी आषाढ़ दूज पर रथयात्रा निकाली जाती है। यहां की रथयात्रा सबसे अनोखी इसीलिए मानी जाती है कि यहां यह रथयात्रा

वचन निभाने दो सौ वर्षों से भगवान जगन्नाथ आते हैं मानौरा

भगवान मानौरा क्यों आते है ?



मानौरा के ग्रामीण और पुराने लोग बताते हैं कि भगवान जगदीश के मानौरा पधारने के पीछे भी एक इतिहास है। व्षों पूर्व मानौरा के तरफदार मानिकचंद रघुवंशी निसंतान थे उनकी पत्नी देवी पदमावती इससे बहुत दुखी रहा करती थीं। इन दोनों पति पत्नी की भगवान जगदीश में घनधोर आस्था थी। दोनों ने पिंड भरते हुए (दंडवत करते हुए यात्रा करने को मानौरा एवं विदिशा जिले में पिंड भरना कहा जाता है।)

भगवान जगन्नाथ के दर्शन के लिए पुरी जाने का निश्चय किया। मानौरा से दंडवत करते हुए दोनों पति पत्नी जगन्नाथ पुरी चल पड़े। दुर्गम रास्ते और काटेदार जंगलों में चलते चलते उनका पूरा शरीर लहलुहान हो गया लेकिन इस दंपति ने हार नहीं मानी और तब भगवान जगन्नाथ ने स्वयं प्रगट होकर इन्हें वापस मानौरा लौटने को कहा। अपने भक्त की भक्ति से प्रसन्न होकर हर वर्ष मानौरा में दर्शन देने का भी वचन दिया। तभी मानौरा में भगवान जगन्नाथ, भगवान बलभद्र और देवी सुभद्रा की मूर्तियां भी प्रगट हुई। भक्त मानते हैं कि अपने वचन को निभाने के लिए जगदीश जी मानौरा में प्रगट हुए और हर वर्ष आषाढी दूज को रथयात्रा के दिन अपने भक्तों को दर्शन देने मानौरा पधारते हैं।

अपने आप खुलते हैं मंदिर के द्वार

मंदिर के पुजारी बताते हैं कि रथयात्रा की पूर्व संध्या पर भगवान को भोग और शयन आरती के बाद रोज की तरह मंदिर के पट बंद कर दिए जाते हैं लेकिन रथयात्रा वाले दिन सुबह यह पट अपने आप खुले हुए मिलते हैं। रथयात्रा के लिए जब भगवान को रथ में सवार कराया जाता है तब अपने आप

हल्का सा कंपन होता है या रथ अपने आप लुढ़कने लगता है। पुजारी का कहना है कि ठीक उसी समय पुरी में भगवान जगन्नाथ के रथ के पहिए थम जाते हैं और वहां के पुजारी घोषणा करते हैं कि भगवान मानौरा पधार गए हैं।

चढ़ता है अटका

मानौरा मंदिर में जगदीश जी की पूजा पुरी में भगवान जगन्नाथ की तरह ही की जाती है। यहां भी मिट्टी की हंडियों में मुख्य पुजारी द्वारा मीठे चावल (भात) बनाये जाते हैं। श्रद्धालु अपनी मन्नत पूरी होने पर भी भगवान को अटका (मीठे भात का भोग) अर्पित करते हैं। मानौरा के भगवान जगदीश के प्रति श्रद्धालुओं की श्रद्धा का दृश्य आज भी अद्भुत एवं अनुरूप होता है। यहाँ आसपास के सैकड़ों गांवों के लोग कीचड़ भरे दुर्गम पथरीले कंकड़ पथरों से भरे रास्ते पर पिंड भरते हुए या नंगे पैर पदयात्रा करते हुए आते हैं। कीचड़ सने पथरीले रास्तों पर इन श्रद्धालुओं के श्रद्धा और विश्वास को देखते हुए बराबस ही आंखें नम हो जाती हैं और सहसा ही हाथ ऐसे श्रद्धालुओं के सम्मान में जुड़ जाते हैं जिन्हें न अपने शरीर की सुध है न हाथ पैरों के छिलने की चिंता है और न ही भूख प्यास को परवाह वे तो सिर्फ एक ही धुन में मग्न हैं।

- जय जगदीश, जय जगदीश।

कहां है हमारी संवेदना?



दिल्ली में छत से धक्का देकर एक लड़की की हत्या को आम आपराधिक घटना माना जा सकता है, लेकिन इससे यह भी जाहिर होता है कि पिछले कुछ समय से अपराध का दायरा कैसे चिंतजनक रूप से फैल रहा है। खबर के मुताबिक, एक युवक ने लड़की को पांचवीं मंजिल से नीचे धक्का दे दिया और फरार हो गया। इलाज के दौरान लड़की की मौत हो गई। माना जा रहा है कि आरोपी पहले से परिचित था, लेकिन जिस तरह वेश बदल कर वह वहां गया था, उससे उसकी मंशा समझी जा सकती है। घटना की तहें जांच के बाद साफ होंगी, लेकिन इतना तय है कि अगर युवक के भीतर लड़की की हत्या करने का दुस्साहस आया तो इसका एक कारण उसका कानूनी कार्रवाई से बेखौफ होना भी हो सकता है। आमतौर पर ऐसी घटनाओं के बाद पुलिस की नौद देर से खुलती है और शायद यही वजह है कि आपराधिक घटनाओं में कमी नहीं आ पा रही। खासतौर पर महिलाओं के सामने यह चुनौती खड़ी हो रही है कि आपराधिक वृत्ति के युवकों की मनमानी के बीच वे कैसे सुरक्षित महसूस करें। क्या यह दिल्ली की कानून-व्यवस्था पर एक सवाल नहीं है? पिछले कुछ समय से दिल्ली और अन्य शहरों-महानगरों में एक विचित्र स्थिति पैदा हो रही है कि बहुत मामूली बातों पर भी दो लोग या पक्ष आपस में हिंसक टकराव पर उतर आते हैं, जिसमें कई बार किसी की जान चली जाती है। इसके अलावा, एक चिंताजनक पहलू यह है कि प्रेम के नाम पर किसी युवक की मनमानी का विरोध करने या इन्कार करने पर लड़की की हत्या तक कर दी जाती है। यह एक ओर कानून-व्यवस्था की विफलता है कि आपराधिक मानस वाले लोगों के भीतर उसका खोफ नहीं दिखता, तो दूसरी ओर यह समाज की भी नाकामी है कि वह लड़कों के भीतर महिलाओं के प्रति जरूरी संवेदनशीलता पैदा नहीं कर पाता। यह ध्यान रखने की जरूरत है कि अगर सरकार और समाज के स्तर पर इस तरह की आपराधिक वृत्ति की रोकथाम के लिए समय पर जरूरी कदम नहीं उठाए गए तो इसका खमियाजा सभी स्तरों पर उठाना पड़ सकता है।

इजराइल-ईरान में सीज़फायर

आज का कार्टून



अब तो नोबेल पुरस्कार पक्का हो गया!



-दिनेश चंद्र वर्मा

हिन्दू धर्म की वर्ण व्यवस्था एवं जाति परम्परा की आलोचना करना आज एक फैशन सरीखा हो गया है, पर इस धर्म में कई तीर्थ स्थान ऐसे भी हैं, जहां वर्ण एवं जाति का कोई भेदभाव नहीं किया जाता है। इन स्थानों पर प्रारंभ से ही सभी जातियों एवं वर्णों को पूजा- अर्चना एवं उपासना का अधिकार है। इन स्थानों में पुरी का जगन्नाथ मंदिर विशेष उल्लेखनीय है। कहा तो यहां तक जाता है कि यदि इस मंदिर में कोई छुआछूत करता है तो उसे कोढ़ हो जाता है। इसीीलियं यह लोकोक्ति प्रचलित हुई जगन्नाथ का भात जगत पसारे हाथ। अर्थात भगवान जगन्नाथ का प्रसाद पाने एवं पूजा करने का अधिकार सबको है। भारतीय धर्मग्रंथों में जिन पवित्र नगरों (पुरियों) का उल्लेख मिलता है, उनमें पुरी भी एक है। इस क्षेत्र को विभिन्न धर्मग्रंथों में उचिष्ठ क्षेत्र, उड्डियन पीठ, पुरुषोत्तम क्षेत्र, जामनिक तीर्थ, शंख क्षेत्र, नीलाद्वी, श्री क्षेत्र, मत्स्य बैकुण्ठ, उत्कल एकाग्र क्षेत्र आदि भी कहा गया है। इस क्षेत्र में प्रतिष्ठित भगवान जगन्नाथ या जगदीश स्वामी की विशेषता यह है कि इनकी पूजा का उल्लेख, इतिहास में इस रूप में मिलता है कि पहले इनकी पूजा गिरिजनों एवं अबोध तथा अशिक्षित आदिवासियों द्वारा की जाती थी। बाद में सभी वर्ण इनकी पूजा और उपासना करने लगे। पुरी के जगन्नाथ मंदिर की एक बड़ी विशेषता यह भी है कि इस पर आक्रांताओं ने आक्रमण तो अनेक बार किए, पर वे मंदिर की सीमा में भी प्रवेश नहीं कर सके। इसका सबसे बड़ा कारण यही था कि इसकी रक्षा के लिये सभी जातियों एवं वर्णों के भक्तों ने अपने प्राणों की आहुति दी। इस मंदिर के साथ हजारों आदिवासियों के बलिदान की गाथा जुड़ी हुई है। भगवान जगन्नाथ के पुरी में विराजमान होने की कथाएं कई धर्मग्रंथों में मिलती हैं। एक कथा के अनुसार द्वा्रिका में एक बार भगवान श्री कृष्ण की पटरानियों ने माता रोहिणी से आग्रह किया कि वे गोपियों के साथ ब्रज भूमि में भगवान श्री कृष्ण की रासलीला और प्रेम का वर्णन सुनायें। इस आग्रह ने जब हठ का रूप धारण कर लिया तो माता रोहिणी तैयार हो गयी। पर उस समय श्रीकृष्ण की बहिन सुभद्रा, मां रोहिणी के पास बैठी हुई थी। माता रोहिणी को यह अनुचित लगा कि वे बहिन (सुभद्रा) के सामने भाई (श्रीकृष्ण) की रासलीलाओं का वर्णन करें। उन्होंने सुभद्रा से कहा कि तुम द्वार पर जाकर खड़ी हो जाओ, क्योंकि श्री कृष्ण आने वाले हैं। जब तक हमारी आज्ञा नहीं हो तब तक दरवाजे पर ही खड़ी रहना तथा किसी को (श्री कृष्ण को भी) भीतर नहीं आने देना। सुभद्रा द्वार पर खड़ी हो गयीं। तभी भगवान श्री कृष्ण एवं बलराम आ गये। सुभद्रा ने दोनों भाइयों को अपने दोनों हाथ फैलाकर उन्हें द्वार में प्रवेश करने से रोका। इसी समय देवर्षि नारद भी आ पहुंचे। उन्होंने दोनों भाईयों एवं बहिन को देखा तो कहा कि किंतना अलौकिक दृश्य है। दोनों भाई एवं बहिन एक साथ दर्शन दे रहे हैं। जो भी आप तीनों का एक साथ दर्शन करेंगे, वे सौभाग्यशाली होंगे। नारद ने इन तीनों की स्तुति की तथा यह वरदान मांगा कि आप तीनों भक्तों के कल्याण के लिये इस रूप में दर्शन दें। नारद की यह प्रार्थना इन तीनों ने यह कहते हुए मान ली कि हम कलियुग में इसी रूप में प्रकट होकर अपने भक्तों का उद्धार करेंगे। धर्मग्रंथों के अनुसार भगवान श्रीकृष्ण, बलराम और भगिनी

सुभद्रा अपने इस वरदान की पूर्ति के लिये उत्कल प्रदेश के नीलाचल पर्वत पर भगवान नील माधव के रूप में अवतरित हुए। उनके श्री विग्रह (प्रतिमा) की पूजा अर्चना देवता करते थे। उसी समय मालवा क्षेत्र पर राजा इन्द्रधुम्म शासक थे। (कुछ ग्रंथों में उन्हें उत्कल का शासक भी बताया गया है।) वे भगवान विष्णु के परम भक्त एवं उपासक थे। उन्हें जब भगवान नीलमाधव के अवतरण का पता चला तो उन्होंने चारों दिशाओं में दूत भेजकर पता चलवाया कि यह श्री विग्रह कहां स्थापित हैं? विद्यापति नामक एक ब्राह्मण के माध्यम से उन्हें पता चला कि भगवान नीलमाधव का यह श्री विग्रह उत्कल प्रदेश में नीलाचल पर्वत पर प्रतिष्ठित है। महाराज इन्द्र धुम्म इस श्रीविग्रह के दर्शनों के लिये परिवार सहित नीलाचल पर्वत के लिये प्रस्थित हुए। इन्द्रधुम्म के आगमन का समाचार मिलते ही देवता उस श्री विग्रह को देवलोक ले गए और नीलाचल पर्वत भूमि में धंस गया।

राजा इन्द्रधुम्म जब पर्वत के पास पहुंचे तो भगवान नीलमाधव के अदृश्य होने के समाचार से बहुत दुखी हुए। पर उन्होंने आशा नहीं छोड़ी, और परिवार सहित उसी स्थान पर बस गये। राजा की इस भक्ति को देखते हुए देवताओं ने आकाशवाणी की कि तुम धैर्य धारण करो। तुम्हें भगवान नीलमाधव अवश्य मियदगे। इसी आशा में राजा इन्द्रधुम्म ने भगवान जगन्नाथ का मंदिर बनवाना प्रारंभ किया। पर इस मंदिर पर अधिकार करने के प्रश्न पर उनका राजा गालमाधव से विवाद हो गया। धर्मग्रंथों में इसके दो कारण बताए जाते हैं। पहिला कारण तो यह बताया गया कि गालमाधव उत्कल प्रदेश का शासक था। वह नहीं चाहता था कि किसी दूसरे राज्य का शासक उसके राज्य में मंदिर बनाए। दूसरा कारण यह बताया जाता है कि मंदिर का निर्माण करने के लिये ब्रह्मा को न केवल इन्द्रधुम्म ब्रह्म लोक गए और जब राजा इन्द्रधुम्म ब्रह्मा को लेकर लौटे तब तक उनके कई उत्तराधिकारी सत्ता सम्हाल कर इस भूलोक से जा चुके थे। इस विवाद को कागभृशुन्डि ने सुलझाया तथा मंदिर पर राजा इन्द्रधुम्म का अधिकार बताया। मंदिर का जब निर्माण पूरा हो गया तो राजा इन्द्रधुम्म ने ब्रह्मा से प्रार्थना की कि मंदिर में भगवान नीलमाधव की

प्रतिमा प्रतिष्ठित की जाए। पर ब्रह्मा ने यह प्रार्थना अस्वीकार कर दी तथा कहा कि भगवान नीलमाधव अपनी ही इच्छा से प्रकट होंगे। ब्रह्मा ने मंदिर के ऊपर एक चक्र तथा ध्वज प्रतिष्ठित किया। यह ध्वज और चक्र अब नीलचक्र कहलाता है। पर इसके बाद भी भगवान नीलमाधव प्रकट नहीं हुए। राजा इन्द्रधुम्म ने भगवान नीलमाधव को इस धरती पर अवतरित करने के लिये तपस्या प्रारंभ की। वे कुश की शैथ्या पर सोने लगे तथा कठोर व्रत (उपवास) प्रारंभ कर दिया। एक दिन भगवान नीलमाधव ने स्वजन में आकर राजा इन्द्रधुम्म से कहा कि अब तुम्हारी निराशा के दिन समाप्त हो गये हैं। मैं दारु ब्रह्म की लकड़ी के रूप में आ रहा हूं। उसी लकड़ी से तुम मेरी प्रतिमाएं बनाकर स्थापित करना। दूसरे दिन भगवान द्वारा निर्देशित स्थान पर दारु ब्रह्म की एक बहुत बड़ी लकड़ी समुद्र में बहती हुई आयी, जिस पर भगवान विष्णु के प्रतीक चिन्ह शंख, चक्र, गदा और पद्म अंकित थे। राजा इन्द्रधुम्म ने अनेक कुशल कारीगरों से प्रतिमाएं बनवाने का प्रयास किया पर सफलता

नहीं मिली। राजा इन्द्रधुम्म फिर निराश होने लगे, तभी स्वर्ग से विश्वकर्मा का एक बूढ़े बड़ई के रूप में अवतरण हुआ। उन्होंने राजा से कहा कि वे 21 दिनों के भीतर प्रतिमाएं बना दें। पर प्रतिमाओं का निर्माण वे एकांत में करेंगे तथा जिस महल में वे प्रतिमाएं बनायेंगे, उस महल के द्वार 21 दिन के पहिले किसी भी हालत में नहीं खोले जाएं। 21वें दिन महल के द्वार खुलेंगे तब तक प्रतिमाओं का निर्माण हो चुकेगा। बूढ़े बड़ई का रूप धारण किए विश्वकर्मा ने अपना कार्य प्रारंभ किया। राजा इन्द्रधुम्म अपनी महारानी के साथ महल के बाहर खड़े होकर मूर्तियों के निर्माण की आवाज सुनते रहे। दो सप्ताह बाद राजा को आवाज सुनाई पड़नी बंद हो गयी। महारानी को शंका हुई कि इतने दिनों में बूढ़ा बड़ई कहीं भूख प्यास से मर तो नहीं गया हो। राजा इन्द्रधुम्म ने रानी को बहुत समझाया, पर रानी हठ करती रही, नतीजे में दरवाजा खुलवाया गया तो बड़ई तो लापता था पर भगवान जगन्नाथ, बलराम एवं सुभद्रा की अपूर्ण प्रतिमाएं वहीं थीं। इन प्रतिमाओं के हाथ और पैर नहीं थे। राजा इन्द्रधुम्म ने इन प्रतिमाओं की अपूर्णता के लिए अपने आपको दोषी माना। उन्होंने पुनः कठोर उपवास शुरु किए। इसी समय आकाशवाणी हुई कि राजा इन्द्रधुम्म तुम अपने आपको दोषी मत समझो। मैं बिना हाथ और पैर के अपने भक्तों की भक्ति एवं सेवा को स्वीकार करता रहूंगा। मेरी इसी रूप में इस मंदिर में प्रतिष्ठित होने की इच्छा है। पुरी में

जिस स्थान पर भगवान जगन्नाथ, बलराम और देवी सुभद्रा की प्रतिमाओं का निर्माण हुआ, उसे जनकपुर या ब्रह्मलोक करते हैं तथा यह गुंडीका मंदिर के पास है। भगवान जगन्नाथ का वर्तमान मंदिर देश के विशालतम मंदिरों में से एक है। इतिहासकारों के अनुसार वर्तमान विशाल मंदिर का निर्माण सन् 1100 ईस्वी के आसपास उत्कल के तत्कालीन नरेश महाराज अनंत वर्मन ने प्रारंभ करवाया था। प्रति बारह वर्ष के अंतराल में भगवान जगन्नाथ, भगवान बलराम एवं भगवती सुभद्रा की नई प्रतिमाएं प्रतिष्ठित होती है। इन प्रतिमाओं का निर्माण उन दारु वृक्षों से होता है जिन पर शंख, चक्र, गदा एवं पद्म के चिन्ह प्राकृतिक रूप से उत्कीर्ण होते हैं। भगवान जगन्नाथ, जगदीश स्वामी भी कहे जाते हैं। पुरी स्थित उनके मंदिर में उन्हें आठ बार भोग लगाया जाता है। इस भोग में 56 व्यंजन होते हैं, पर प्रसुखता भात (चावल) की ही रहती है। मंदिर के द्वार 24 घंटे में से 21 घंटे खुले रहते हैं। मंदिर में प्रवेश के लिये हिन्दू होना अनिवार्य है, पर वहां जाति एवं वर्ण का प्रतिबंध प्रारंभ से ही नहीं है। इसीलिए शताब्दियों से देश के कोने-कोने से भक्तजन भगवान जगन्नाथ या जगदीश स्वामी के दर्शनों के लिये पहुंचते हैं। यह क्रम सदियों से जारी है। उस समय से जब इस देश में रेल एवं बसे तक नहीं थी। भगवान जगन्नाथ स्वामी लौकिक एवं अलौकिक दोनों ही कामनाओं की पूर्ति करने वाले कहे जाते हैं। मेरे दादा (पितामह) मध्यप्रदेश के एक गांव में निवास करते थे, पर वे उस समय (कोई सवा सौ वर्ष पूर्व) जगन्नाथ स्वामी के दर्शनार्थ पहुंचे थे। वे जिस कामना को लेकर गये थे, वह पूरी हुई तथा चार पुत्रियों के बाद उन्हें पुत्र की प्राप्ति हुई थी। आज भी अपनी मनोकामना की पूर्ति के लिये प्रतिदिन हजारों नर-नारी जगन्नाथ पुरी पहुंचते हैं। जगन्नाथ पुरी की रथ यात्रा सारे भारत में प्रसिद्ध है। इस संबंध में एक धार्मिक कथा मिलती है। एक बार सुभद्रा ने भ्रमण की इच्छा व्यक्त की। इसके लिये भगवान श्री कृष्ण ने तीन रथ बनवाए थे। इन रथों पर भगवान श्रीकृष्ण, सुभद्रा एवं बलराम ने भ्रमण किया था। उस दिन आषाढ़ शुक्ल पक्ष की द्वितीया थी। उसी भ्रमण की स्मृति में जगन्नाथपुरी में रथ यात्रा निकाली जाती है। इस रथ यात्रा का एक प्रतीकात्मक महत्व भी है। उस दिन रथ के सामने पुरी के महाराजा को झाड़ू लगाना पड़ती है। इसका अर्थ यह भी है कि भगवान जगन्नाथ के सामने राजा और रंक सभी समान है। उनके भक्तों की का कोई जाति है और न वर्ण। उनके सामने शूद्र पूजा कर सकता है और राजा को झाड़ू लगाना होता है। जगद्गुरु शंकराचार्य ने जगन्नाथ पुरी के इस महत्व को समझा था। इसीीलियं उन्होंने जिन चार पीढ़ों की स्थापना की, उनमें एक पीठ जगन्नाथ पुरी में भी है। कलियुग में जगन्नाथ पुरी का महत्व बताते हुए कुछ धर्मग्रंथ कहते हैं कि सप्तयुग का धाम ब्रद्रीनाथ, त्रेतायुग का धाम रामेश्वरम, द्वापर युग का धाम द्वा्रिका तथा कलियुग का धाम जगन्नाथ पुरी है। जहां बिना किसी कर्मकांड के मात्र दर्शन से ही भगवान जगन्नाथ स्वामी प्रसन्न होते हैं तथा अपने भक्तों की लौकिक-अलौकिक मनोकामनाओं की पूर्ति करते हैं।

विकास और प्रकृति संरक्षण की मिसाल बन रहा मध्यप्रदेश

-अनुज यादव

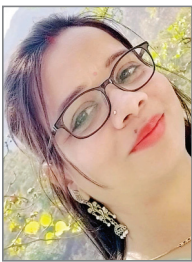
जल, जंगल और जीव-जंतुओं का संरक्षण केवल पर्यावरणीय मुद्दा नहीं, बल्कि मानव सभ्यता और संस्कृति से भी गहराई से जुड़ा विषय है। भारत का प्राचीन दृष्टिकोण प्रकृति के प्रति आदर और सह-अस्तित्व का रहा है। वेदों, उपनिषदों और पुराणों में वृक्षों, नदियों, पर्वतों और जीवों को देवतुल्य माना गया है। इसी कारण भारतीय जनमानस में प्रकृति के प्रति सहज प्रेम देखने को मिलता है। पश्विमी प्रभावों, औद्योगिकीकरण और आधुनिकता के कारण जंगलों का विनाश तेज होने के परिणामस्वरूप जलवायु परिवर्तन, जैव विविधता का ह्रास और जैव पारिस्थितिक असंतुलन जैसी गंभीर समस्याएं सामने आईं। ऐसे में, यह बहुत आवश्यक हो गया कि विकास के साथ-साथ पर्यावरण संरक्षण को भी प्राथमिकता दी जाए। इसी विचार के अनुरूप मध्यप्रदेश सरकार ने हाल ही में जो निर्णय लिए हैं, वे केवल प्रशासनिक घोषणाएं नहीं, बल्कि एक दूरदर्शी दृष्टिकोण का प्रमाण हैं। मुख्यमंत्री डॉ. मोहन यादव के नेतृत्व में प्रदेश में प्रवेश के साथ ही वन्य जीव संरक्षण के क्षेत्र में अभूतपूर्व कार्य किए हैं। बीते छह महीनों में राज्य में दो नए टाइगर रिजर्व-रातापानी-वाकणकर और शिवपुरी घोषित किए हैं। इसके साथ ही ओंकारेश्वर और जहानगढ़ दो अभयारण्य घोषित किए गए हैं। इतने कम समय में चार संरक्षित क्षेत्र घोषित करने का यह निर्णय एक मिसाल है, जो वनों और वन्य जीव संरक्षण की दिशा

में सरकार की प्रतिबद्धता को दर्शाता है। वनों का संरक्षण केवल वृक्षों की रक्षा भर नहीं, बल्कि संपूर्ण पारिस्थितिकी तंत्र को संरक्षित करने का कार्य है। जंगलों में रहने वाले असंख्य जीव-जंतुओं का जीवन इन वनों पर निर्भर करता है। जब जंगलों को संरक्षित क्षेत्र घोषित किया जाता है, तो वहां होने वाली अवैध गतिविधियों, अतिक्रमण, अवैध कटाई, शिकार और तस्करी पर कठोर नियंत्रण संभव होता है। आमतौर पर सामान्य वनों में इन अपराधों पर रोक लगाना प्रशासन के लिए कठिन होता है, लेकिन संरक्षित क्षेत्र घोषित होने के बाद सख्त कानूनी कार्रवाई संभव होती है, जिससे वन्यजीवों और प्राकृतिक संसाधनों को सुरक्षित रखने में मदद मिलती है। मुख्यमंत्री डॉ. मोहन यादव का यह निर्णय केवल पर्यावरणीय दृष्टि से ही नहीं, बल्कि विपटन और स्थानीय अर्थव्यवस्था के लिहाज से भी अत्यंत महत्वपूर्ण है। संरक्षित क्षेत्र बनने से इको-टूरिज्म को बढ़ावा मिलेगा, जिससे स्थानीय लोगों को रोजगार मिलेगा। जंगलों से जुड़े समुदायों की आजीविका को स्थायित्व मिलेगा और वे वन संरक्षण की इस पहल में अपनी सहभागिता सुनिश्चित करेंगे। यह दृष्टिकोण न केवल वन्यजीवों की रक्षा करेगा, बल्कि यह सिद्ध करेगा कि सतत विकास की अवधारणा को साकार किया जा सकता है। प्रधानमंत्री श्री नरेंद्र मोदी के नेतृत्व में भारत ने पर्यावरण के क्षेत्र में वैश्विक स्तर पर अपनी पहचान बनाई है। उनकी प्रेरणा से ही भारत नेट-जीरो

कार्बन उत्सर्जन, मिशन लाइफ और इंटरनेशनल सोलर अलायंस जैसी पहलों को सफलतापूर्वक आगे बढ़ा रहा है। वर्ष 2022 में कूनों राष्ट्रीय उद्यान में नामीबिया और दक्षिण अफ्रीका से लाए गए चीतों का पुनर्वास इसी दिशा में एक ऐतिहासिक कदम था। इसकी सफलता ने दुनिया का ध्यान इस ओर खींचा है। मध्यप्रदेश सरकार ने इस दिशा में आगे बढ़ते हुए न केवल टाइगर रिजर्व और अभयारण्य स्थापित किए, बल्कि संकटग्रस्त पक्षी गिद्धों की संख्या बढ़ाने के लिए विशेष कार्यक्रम भी शुरू किया है। साथ ही, नर्मदा और चंबल नदी में कछुआ और मगरमच्छ संरक्षण परियोजनाओं को भी नया रूप दिया जा रहा है। इसके अतिरिक्त, वन्य जीव पर्यटन को नई ऊंचाई देने के लिए मुख्यमंत्री डॉ. मोहन यादव ने हाल ही में कई महत्वपूर्ण कदम उठाए हैं। इसी वर्ष 5 फरवरी 2025 को मुख्यमंत्री ने 5 वयस्क चीते कूनों नेशनल पार्क में छोड़े। इसके बाद, 17 फरवरी को राष्ट्रीय चंबल अभयारण्य में 10 षड्विधालों को चंबल नदी में पुनर्वासित किया गया। हाल ही में मुख्यमंत्री ने शिवपुरी जिले में प्रदेश के 9वें माधव नेशनल टाइगर रिजर्व का लोकार्पण कर एक बाधिन को उसके प्राकृतिक आवास में मुक्त किया था। वन तथा वन्य जीवों के प्रति मध्यप्रदेश सरकार की यह प्रतिबद्धता केवल पर्यावरण प्रेमियों के लिए ही नहीं, बल्कि उन सभी नागरिकों के लिए एक वाक्य है जो प्राकृतिक संसाधनों की महत्ता को समझते हैं। यह केवल

वृक्षों, पशुओं या पक्षियों की रक्षा नहीं, बल्कि हमारे भविष्य को संरक्षित करने का प्रयास है। जब जंगल संरक्षित होते हैं, तो वे जल स्रोतों की रक्षा करते हैं, जलवायु परिवर्तन की गति को धीमा करते हैं और पारिस्थितिकी संतुलन बनाए रखते हैं। सरकार के यह प्रयास प्रदेश को न केवल पर्यावरणीय दृष्टि से समृद्ध बनाएंगे बल्कि वैश्विक मंच पर भी वनों और वन्य जीव संरक्षण की दिशा में अग्रणी राज्यों में स्थान दिलाएंगे। मुख्यमंत्री डॉ. मोहन यादव ने जो ऐतिहासिक पहल की है, वह केवल प्रशासनिक निर्णय नहीं, बल्कि एक दूरदर्शी सोच का परिणाम है। यह इस बात का उदाहरण है कि जब नेतृत्व में दूरदर्शिता और संकल्पशक्ति हो, तो प्रकृति और विकास के बीच संतुलन स्थापित करना संभव है। प्रधानमंत्री श्री नरेंद्र मोदी के नेतृत्व में भारत वन्यजीव संरक्षण की दिशा में जो कदम उठा रहा है, मध्यप्रदेश सरकार उसे अपने निर्णयों से और अधिक प्रभावी बना रही है। जब जंगल संरक्षित होंगे, तब न केवल वन्यजीवों को उनका प्राकृतिक आवास मिलेगा, बल्कि जलवायु परिवर्तन पर नियंत्रण, जल स्रोतों की सुरक्षा और भविष्य की पीढ़ियों को एक समृद्ध प्राकृतिक विरासत प्राप्त होगी। मध्यप्रदेश सरकार ने इस दिशा में जो कदम उठाए हैं, वे पूरे देश के लिए एक प्रेरणा हैं और इस बात का प्रमाण है कि जब संकल्प मजबूत हो, तो पर्यावरण संरक्षण और आर्थिक विकास दोनों को साथ लेकर चला जा सकता है। (लेखक पर्यावरण विषयों के अध्येता हैं)

जग के नाथ जगन्नाथ



शरण में जो आए, प्रभु तारते हैं। दया दृष्टि से ही संकट हरते हैं। रथ में विराजे, नगर घूमते हैं। कृपा से सभी को नव जन्म देते हैं॥ सुभद्रा समेतें, बलदेव साथे। भक्ति में लहरें, जन मोद पाथे। ध्वज न पराक, शुभ चित्त राखे। पवित्र पथों पर चरण प्रभु राखे॥

पट जब खुले तो हृदय नाचेरे। भीड़ें उमड़तीं, सभी गाएँ रे। रथ खींच भक्तों का मन भाए रे। मोक्षपथ खुद प्रभु बतलाएँ रे॥ कालों में कलि का ये नाथ जग है। केशव का साक्षात् रूप रथ मग है। हरि नाम से ही तो भक्ति उमग है। रथयात्रा चेतन पथ की सजग है॥ सागर समपते, चरणों पे होवे। मग मन्दिरों में प्रभु प्रेम रोवे। जग के अधीशा, कृपा की शोभा। जगन्नाथ ही तो शरण हैं लोभा॥ -स्वाति सिंह साहिबा, संस्थापिका अनुरनन प्रतिध्वनि साहित्यिक मंच महेश्वर

सार-समाचार

छनेरा रेलवे स्टेशन पर विकास की मांगों को लेकर विस्थापित संघ ने सौंपा ज्ञापन

अनोखा तीर, छनेरा/खंडवा। हरसूद विस्थापित संघ के सदस्यों ने स्थानीय रेलवे सुविधाओं के उन्नयन और यात्री हित में लंबित मांगों को लेकर छनेरा रेलवे स्टेशन पहुंचकर स्टेशन प्रबंधक रीतेश रंजन को दो ज्ञापन सौंपे। ये ज्ञापन क्रमशः रेल मंत्री, पश्चिम रेलवे महाप्रबंधक एवं भीपाल रेल मंडल (डीआरएम) के नाम संबोधित किए गए। पहले ज्ञापन में संघ ने अमृत भारत स्टेशन योजना 2.0 के अंतर्गत छनेरा रेलवे स्टेशन का शीघ्र उन्नयन



किए जाने की मांग रखी। इस ज्ञापन में वेंटिंग रूम, यात्री प्रतीक्षालय, टीन शेड, स्वच्छ सुविधा गुहा, इलेक्ट्रॉनिक डिस्प्ले बोर्ड, दिव्यांग यात्रियों के लिए रैप जैसी बुनियादी सुविधाओं को जल्द प्रारंभ करने की आवश्यकता जताई गई। दूसरे ज्ञापन में संघ ने 22111/22112 नागपुर-भुसावल सुपरफास्ट ट्रेन को पुनः प्रारंभ करने की मांग की। संघ के पदाधिकारियों ने बताया कि यह ट्रेन कोविड-19 काल से बंद है, जबकि श्रावण मास में ओंकारेश्वर दर्शन, गुरु पूर्णिमा पर्व, और अन्य धार्मिक अवसरों पर लाखों श्रद्धालु इस ट्रेन से यात्रा करते थे। उन्होंने कहा कि ट्रेन के पुनः संचालन से यात्रियों को सुविधा मिलेगी और रेलवे को राजस्व वृद्धि का भी लाभ होगा। इस दौरान अनुराग बंसल, चंद्र कुमार सांड, राजेंद्र दीवान, ऋषिराज शुक्ला, राजेंद्र अग्रवाल, बालकदास 'टिपटॉप', अनु यादव, नीतेश शर्मा सहित कई सदस्य उपस्थित रहे। सभी ने एकजुटता के साथ रेलवे प्रशासन से मांगों को शीघ्र अमल में लाने का आग्रह किया।

विद्यार्थी ड्रास से दूर रहे ये जिंदगी बर्बाद कर देता है: न्यायाधीश जैन

अनोखा तीर, खरगोन। विद्यार्थियों को नशे से हमेशा दूर रहना चाहिए, नशा आपको जिंदगी बर्बाद करेगा, साथ ही आपको परिवार भी इससे प्रभावित होगा, युवा पीढ़ी राष्ट्र की प्रगति का आधार होता है इसलिए किसी भी प्रकार का नशा नहीं करें। यह बातें जिला विधिक सेवा प्राधिकरण के अध्यक्ष प्रधान जिला न्यायाधीश अखिलेश जोशी के निर्देश पर चरक इंस्टीट्यूट ऑफ फार्मेसी मंडलेश्वर में आयोजित विधिक साक्षरता शिविर में सचिव एवं वरिष्ठ खंड न्यायाधीश सुश्री प्रीति जैन ने कही। उन्होंने कहा कि कॉलेजों में रैगिंग नहीं होना चाहिए। विद्यार्थी अगर इससे पीड़ित है तो उसे कॉलेज की एंटी रैगिंग कमेटी से शिकायत करना चाहिए। मामला मारपीट तक पहुंच जाए तो इसकी शिकायत पुलिस थाने में भी करना चाहिए। एलएडीसीएस असिस्टेंट निशा कोशल ने मोटर व्हीकल एक्ट की जानकारी दी। पीएलवी दुर्गेश राजदीप ने विधिक सेवा की जानकारी दी। संस्था के प्रो बीएन बिरला ने स्वागत भाषण में संस्थान की एंटी रैगिंग कमेटी की जानकारी दी। आभार डॉ. श्याम सिन्हा ने किया।

महेश्वर-मंडलेश्वर के मंदिर, घाट, न्यायालय और स्कूल घोषित होंगे तम्बाकू मुक्त क्षेत्र

अनोखा तीर, खरगोन। जिले के पवित्र नगर महेश्वर और मंडलेश्वर को तम्बाकू मुक्त क्षेत्र घोषित करने की दिशा में बड़ा कदम उठाया गया है। कलेक्टर सुश्री भव्या मितल के निर्देश पर अनुविभागीय अधिकारी राजस्व अनिल जैन की अध्यक्षता में गुरुवार को नगर परिषद मंडलेश्वर के सभागृह में एक अहम बैठक आयोजित की गई। यह बैठक राष्ट्रीय तम्बाकू नियंत्रण कार्यक्रम के अंतर्गत रखी गई, जिसमें जिले के स्वास्थ्य, शिक्षा और स्थानीय प्रशासन के वरिष्ठ अधिकारियों ने भाग लिया। इन प्रमुख स्थलों पर रहेगा तम्बाकू प्रतिबंध- बैठक में तय किया गया कि अब महेश्वर और मंडलेश्वर के मंदिर, नर्मदा घाट, अन्नक्षेत्र, न्यायालय, शिक्षण संस्थान और पार्किंग स्थल पूर्णतः तम्बाकू मुक्त रहेंगे। इन स्थानों पर तम्बाकू बेचने या सेवन करने वालों पर सख्त कार्यवाही की जाएगी। निगरानी एवं प्रवर्तन तंत्र होगा गठित- एसडीएम श्री जैन ने बताया कि इन स्थलों की पहले सूची बनाई जाएगी और फिर स्थानीय नागरिकों, नगर परिषद के कर्मचारियों व संबंधित संस्थानों के प्रतिनिधियों को मिलाकर निगरानी दल गठित होंगे। इन दलों के ऊपर प्रवर्तन दल बनाया जाएगा जिसमें राजस्व और पुलिस विभाग के अधिकारी शामिल रहेंगे, जो निगरानी दल की गतिविधियों पर निगरानी रखेंगे और जरूरत पड़ने पर दंडात्मक कार्यवाही करेंगे।

सर्पदंश से बचाव व उपचार के लिए स्वास्थ्य विभाग ने दी सलाह

अनोखा तीर, खंडवा। वर्षा ऋतु में सर्पदंश की घटनाओं से बचाव के संबंध में मुख्य चिकित्सा अधिकारी ने नागरिकों को सलाह दी है कि सर्पदंश से पीड़ित व्यक्ति को दौड़ने या तेज चलने न दें, उसे पीने या खाने के लिए कुछ भी न दें। उन्होंने बताया कि सर्पदंश वाले स्थान पर सूजन आ सकती है। इसलिए जुता, अंगूठी, कलाई घड़ी, ब्रेसलेट या टाइट कपड़ों को जल्द ही उतार देना चाहिए। काटे हुए अंग का हिलाना नहीं बल्कि उसे स्थिर रखें। उन्होंने सलाह दी है कि सर्पदंश वाले स्थान को किसी नुकीली चीज से काटने अथवा मुंह से जहर घूसने की कोशिश बिल्कुल न करें। सर्पदंश के बाद यथाशीघ्र सरकारी अस्पताल में जाकर योग्य चिकित्सक से इलाज कराना चाहिए एवं झाड़ूफूक का प्रयास नहीं करना चाहिए। उन्होंने बताया कि सर्पदंश की घटना के 100 मिनट के भीतर अस्पताल में उचित उपचार करने से मरीज के बचने की 100 प्रतिशत संभावना रहती है। अतः सर्पदंश के मरीज को बिना समय गवाएं नजदीकी प्राथमिक या सामुदायिक स्वास्थ्य केंद्रों पर ले जाकर उपचार कराना चाहिए।

खंडवा-झिरनिया नहर परियोजना से अब जुड़ेंगे 12 छूटे गाँव

● विधायक छाया मोरे के प्रयासों से प्रशासकीय स्वीकृति के आदेश जारी ● किसानों और ग्रामीणों ने जताया आभार

अनोखा तीर, खंडवा। क्षेत्रीय किसानों के लिए एक बड़ी राहत की खबर सामने आई है। खंडवा-झिरनिया नहर सिंचाई परियोजना से अब तक वंचित रहे 12 गांवों को इस परियोजना से जोड़े जाने की प्रक्रिया प्रारंभ हो चुकी है। यह संभव हो सका है पंधाना विधायक छाया गोविंद मोरे के सतत प्रयासों और दूरदृष्टिता के कारण, जिनकी पहल पर जल संसाधन विभाग ने प्रशासकीय स्वीकृति की दिशा में कदम बढ़ा दिए हैं।

विधायक की पहल से आया बदलाव- समाजसेवी और प्रवक्ता सुनील जैन ने बताया कि विधायक मोरे क्षेत्र के किसानों की समस्याओं के प्रति सदैव संवेदनशील रहें हैं। उन्होंने लगातार विभागीय अधिकारियों, मंत्रियों और शासन स्तर पर संवाद स्थापित कर कालंका, नानखेड़ा, गाड़ाघाट, जामला, खारी, गोडियाबावा, घाटीखास, गोल इमली, काल्याबाड़ी, देवनालिया और उदयपुर जैसे 12 गांवों को नहर परियोजना से जोड़ने की पुरजोर मांग की। विधायक के इस सतत प्रयास का परिणाम यह रहा कि जल संसाधन विभाग भीपाल के प्रमुख अभियंता ने इंदौर के मुख्य अभियंता को पत्र भेजकर प्रस्तावित परियोजना को प्रशासकीय स्वीकृति प्रदान करने के निर्देश जारी किए हैं। साथ ही प्रक्रिया को शीघ्र पूर्ण करने के भी स्पष्ट निर्देश दिए गए हैं।

किसानों को मिलेगा सीधा लाभ- इन गांवों को नहर



परियोजना से जोड़ने से हजारों एकड़ भूमि को सिंचाई की सुविधा प्राप्त होगी, जिससे क्षेत्र के कृषक वर्ग को जल संकट से मुक्ति मिलेगी और कृषि उत्पादन में वृद्धि होगी। ग्रामीणों ने इसे ऐतिहासिक पहल बताते हुए विधायक छाया मोरे का आभार व्यक्त किया है।

ग्रामीणों ने जताया आभार- नहर परियोजना से जुड़ाव को लेकर ग्रामीणों में उत्साह का माहौल है। किसान प्रतिनिधियों का कहना है कि यह निर्णय दीर्घकालिक लाभ देने वाला होगा और वर्षा पर निर्भरा कम होगी। ग्रामीणों ने विधायक छाया मोरे की सक्रियता और दृढ़ संकल्प की प्रशंसा करते हुए उन्हें किसान हितैषी जनप्रतिनिधि बताया।

पुनासा अस्पताल को एनएचडीसी से मिली एम्बुलेंस की सौगात

अनोखा तीर, खंडवा। एनएचडीसी द्वारा सामाजिक दायित्व योजना के तहत विकासखण्ड पुनासा के सामुदायिक स्वास्थ्य केंद्र मूंदी को मांछता विधायक नारायण पटेल के प्रयासों से नई एम्बुलेंस की सौगात मिली है। विधायक पटेल द्वारा गुरुवार को मूंदी अस्पताल परिसर में एम्बुलेंस का लोकार्पण कर खण्ड चिकित्सा अधिकारी डॉ. रविन्द्र मण्डलोई को वाहन की चाबी सौंपी गयी।

13 वर्षों बाद प्रारंभ हुई छाया मोरे की प्रयास लाए रंग

विधायक छाया मोरे के प्रयास लाए रंग

-किसानों ने विधायक का किया स्वागत, उपज के मिले अच्छे दाम

अनोखा तीर, खंडवा।

क्षेत्र के किसानों के लिए एक बड़ी राहत की खबर सामने आई है। बीते 13 वर्षों से बंद पड़ी छाया मोरे उपमंडी अब पुनः प्रारंभ हो गई है। करोड़ों रूपए की लागत से निर्मित यह मंडी लंबे समय से निष्क्रिय थी, लेकिन पंधाना क्षेत्र की विधायक श्रीमती छाया गोविंद मोरे के अथक प्रयासों से अब यह मंडी किसानों के लिए फिर से खुल गई है। मंडी का विधिवत शुभारंभ गुरुवार को पूजा-अर्चना के साथ किया गया। इस अवसर पर विधायक छाया मोरे के साथ मंडी सचिव ओपी खेड़े, बड़ी संख्या में किसान, व्यापारीगण और स्थानीय जनप्रतिनिधि उपस्थित रहे। कार्यक्रम में शामिल किसानों ने विधायक का स्वागत करते हुए उन्हें धन्यवाद ज्ञापित किया और कहा कि अब उन्हें अपनी उपज बेचने के लिए दूर नहीं जाना पड़ेगा।



लगातार प्रयासों से मिली सफलता- विधायक मोरे द्वारा विधानसभा सत्र के दौरान उपमंडी के मुद्दे को प्रमुखता से उठाया गया। उन्होंने मुख्यमंत्री, कृषि मंत्री और संबंधित अधिकारियों से लगातार पत्राचार किया और मंडी की स्थिति को लेकर प्रश्न भी लगाए। इसके बाद अधिकारियों ने मंडी की विस्तृत जानकारी भीपाल भेजी और व्यवस्थाओं को अंतिम रूप दिया गया। मंडी को चालू कराने में हो रही देरी को

लेकर भी उन्होंने संबंधित विभागों पर दबाव बनाया।

पहले ही दिन किसानों को मिले अच्छे दाम- मंडी के शुभारंभ पर लगभग 40 से 50 किसानों ने अपनी उपज के साथ भाग लिया। मंडी सचिव ओपी खेड़े ने बताया कि पहले दिन 270 बोरे गेहूं और 134 क्विंटल सोयाबीन का विक्रय हुआ। किसानों को उनकी उपज के अच्छे दाम मिलने से उन्होंने प्रसन्नता जताई और इसे विधायक के प्रयासों का

प्रतिफल बताया।

कार्यक्रम में उपस्थित गणमान्य जन- इस अवसर पर मंडल अध्यक्ष जयपाल सिंह चौहान, जनपद अध्यक्ष महेंद्र सिंह सावनेर, पंधाना जनपद अध्यक्ष सुमित्रा काले, समाजसेवी व प्रवक्ता सुनील जैन, जितेंद्र सिंह मंडलोई, मुकेश पटेल, राजेश पटेल, महिला मंडल अध्यक्ष शिवकन्या सिसोदिया, उमाबाई कुशवाह, फकीरचंद कुशवाह, शिवनारायण कुशवाह, संतोष हिरवे, हरिराम कुशवाह, किसान संघ अध्यक्ष दिनेश महाजन, नरेंद्र पटेल सहित सैकड़ों किसान एवं व्यापारी उपस्थित रहे।

मंडी का संचालन और अवकाश- मंडी सचिव ने जानकारी दी कि मंडी सप्ताह में मंगलवार से शुक्रवार तक खुलेगी। शनिवार, रविवार एवं सोमवार (मुख्यमंत्री प्रवास के चलते) को अवकाश रहेगा।

किसानों को मिला नया संबल- क्षेत्रीय किसानों ने इस पहल को अत्यंत सराहनीय बताया और कहा कि लंबे समय बाद अब उन्हें उचित मंच और मूल्य मिलेगा। इससे ना केवल स्थानीय व्यापार को बढ़ावा मिलेगा बल्कि किसानों की आर्थिक स्थिति में भी सुधार होगा।

स्वच्छता की ओर जनभागीदारी से खंडवा बनेगा नंबर वन

नगर निगम चला रहा विशेष जागरूकता अभियान



अनोखा तीर, खंडवा। नगर निगम स्वच्छ भारत मिशन को साकार करने और शहर को स्वच्छता रैंकिंग में शीर्ष स्थान दिलाने के लिए जनभागीदारी आधारित नवाचरो को अपनाते हुए कार्य कर रहा है। महापौर श्रीमती अमृता यादव और आयुक्त श्रीमती प्रियंका सिंह राजावत के नेतृत्व में निगम द्वारा वार्ड-स्तर पर विशेष सूचना, शिक्षा और संचार अभियान चलाया जा रहा है, जिसमें समाज की भागीदारी को केंद्र में रखा गया है।

स्वच्छता जागरूकता अभियान की विशेष पहल- प्रवक्ता सुनील जैन ने जानकारी देते हुए बताया कि नगर निगम की टीम द्वारा घर-घर संपर्क कर नागरिकों को गीला-सूखा कचरा पृथक्करण, प्लास्टिक उपयोग में कमी, खुले में शौच से मुक्ति, तथा स्वच्छ जीवन शैली अपनाने के लिए प्रेरित किया जा रहा है। यह अभियान केवल जानकारी देने तक सीमित नहीं, बल्कि लोगों की सोच और आदतों में सकारात्मक बदलाव लाने का प्रयास है।

गुरुवार को वार्ड क्रमांक 4, 10 और 29 में टीम द्वारा सघन जनसंपर्क किया गया, जिसमें कुमारी दीपमाला कटोरे, अमा हिरवे, दीपिका श्रीवास्त, रवि शर्मा, एवं संदीप खराले ने सक्रिय भागीदारी निभाई।

हर घर में समझाइश, हर नागरिक में जागरूकता

टीम द्वारा नागरिकों को बताया गया कि- गीला कचरा (सब्जी, फल, बासी भोजन आदि) को हरे रंग के डस्टबिन में रखें, सूखा कचरा (कागज, प्लास्टिक, रैपर आदि) को नीले रंग के डस्टबिन में रखें, प्लास्टिक उपयोग को कम करें और पुनः उपयोग योग्य वस्तुएं अपनाएं। इस अभियान के माध्यम से निगम प्रशासन यह सुनिश्चित करना चाहता है कि शहरवासी स्वच्छता के प्रति न केवल जागरूक हों, बल्कि नियमित व्यवहार में भी इसे शामिल करें।

-मुख्यमंत्री के नाम कलेक्टर को सौंपेंगे ज्ञापन

अनोखा तीर, खंडवा। खंडवा को तीर्थनगरी घोषित किए जाने की मांग को लेकर आज शुक्रवार, 27 जून को दोपहर 3:30 बजे कांग्रेस पार्टी एक विशाल रैली का आयोजन करेगी। यह रैली गांधी भवन से प्रारंभ होकर नगर निगम चौराहे तक निकाली जाएगी। रैली में महिला कांग्रेस, कांग्रेस परिसर, एवं बड़ी संख्या में दादाजी भक्त शामिल होंगे। रैली का मार्ग गांधी भवन से शुरू होकर बाँबे बाजार, केवलराम पेट्रोल पंप, घंटाघर, टाउन हॉल होते हुए नगर निगम कार्यालय पर जाकर समाप्त होगा।

इस दौरान रैली में शामिल जनप्रतिनिधि मुख्यमंत्री के नाम एक ज्ञापन जिला कलेक्टर को सौंपेंगे, जिसमें खंडवा को तीर्थनगरी का दर्जा देने की मांग प्रमुख रूप से रखी जाएगी। इस संबंध में जिला कांग्रेस कमेटी के पूर्व प्रवक्ता प्रेमाश्रु जैन ने जानकारी देते हुए बताया कि आगामी 30 जून को प्रदेश के मुख्यमंत्री खंडवा आगमन पर दादाजी मंदिर निर्माण के भूमिपूजन कार्यक्रम में शिरकत करेंगे।

नुकड़नाटक एवं पोस्टर प्रतियोगिता संपन्न

अनोखा तीर, खंडवा। नंदकुमार सिंह चौहान, शासकीय चिकित्सा महाविद्यालय में अध्यक्षनरत पम्बोनीएस पाठ्यक्रम के छात्र-छात्राओं द्वारा स्वस्थ यकृत मिशन के तहत जिला चिकित्सालय में फैटी लिवर से होने वाली हानियों के प्रति जागरूक करने के लिए नुकड़ नाटक एवं पोस्टर प्रतियोगिता का आयोजन किया गया। इस अवसर पर फैटी लिवर के बारे में छात्र-छात्राओं को जानकारी भी दी गयी। मेडिकल कॉलेज के सुपरिटेण्डेंट डॉ. रंजीत बडोले ने बताया कि वसा युक्त यकृत रोग एक ऐसी स्थिति है, जिसमें लिवर में अत्यधिक वसा जमा हो जाती है। यह स्थिति कई कारणों से हो सकती है। उन्होंने कहा कि जब शरीर में अतिरिक्त वसा होती है, तो यह लिवर में भी जमा हो सकता है। अत्यधिक शराब पीने से भी लिवर में वसा जमा हो सकता है। डायाबिटीज, उच्च कोलेस्ट्रॉल और ट्राइग्लिसराइड ये भी यकृत में वसा जमा हो जाता है।

संपादक प्रहलाद शर्मा / प्रबंध संपादक महेश कौशिक। फोन: 07577-226771 मो.9425045480, समाचार चयन के लिए पी.आर. बी.एक्ट के तहत जिम्मेदार। सभी विवादों का न्याय क्षेत्र हरदा रहेगा।



कौशल, विकास और उद्यमशीलता के स्वर्णिम पथ पर मध्यप्रदेश



नरेन्द्र मोदी, प्रधानमंत्री



डॉ. मोहन यादव, मुख्यमंत्री

रीजनल इंडस्ट्री, स्किल एंड एम्प्लॉयमेंट कॉन्क्लेव

RISE शुभारंभ

मुख्यमंत्री डॉ. मोहन यादव

द्वारा

27 जून 2025 | प्रातः 11:00 बजे | पोलो ग्राउंड, रतलाम

प्रमुख आकर्षण

- ₹ 2012 करोड़ से अधिक लागत की 94 औद्योगिक इकाइयों और क्लस्टरों का भूमिपूजन/लोकार्पण
- 288 एमएसएमई इकाइयों के लिए ₹ 270 करोड़ की प्रोत्साहन राशि का वितरण
- 140 वृहद औद्योगिक इकाइयों को ₹ 425 करोड़ की वित्तीय सहायता का वितरण
- 538 एमएसएमई इकाइयों को भू-खंड आवंटन पत्र वितरण
- ₹ 6000 करोड़ से अधिक निवेश करने व 17600 से अधिक रोजगार देने वाली 35 वृहद औद्योगिक इकाइयों को भूमि आवंटन हेतु आशय पत्र वितरण
- 4 लाख से अधिक हितग्राहियों को स्व-रोजगार के लिए ₹ 3861 करोड़ का ऋण वितरण
- थीमैटिक सेशन
- वन-टू-वन मीटिंग
- एमओयू एक्सचेंज
- प्रदर्शनी

फोकस सेक्टर

- कृषि, खाद्य प्रसंस्करण एवं डेयरी
- जैक्स एंड ज्वेलरी
- नवीकरणीय ऊर्जा
- फार्मा, बायोटेक, रसायन
- लॉजिस्टिक्स
- पर्यटन एवं टेक्स्टाइल

D-11054/25